अपना पैसा

रिटायरमेंट प्लानिंग में स्वास्थ्य बीमा भी शामिल होना चाहिए। रिटायरमेंट के बाद पहली बार अगर कोई स्वास्थ्य बीमा लेना चाहता है तो शायद ही कोई कंपनी उसे पॉलिसी दे, अगर देगी भी तो बहुत ही महंगे प्रीमियम पर। स्वास्थ्य बीमा की शुरुआत जवानी के दिनों से कर देनी चाहिए जिससे उचित प्रीमियम पर बुढ़ापे तक इसे चलाने में आसानी रहे।

रिटायरमेंट प्लानिंग में इन गलतियों से बचें

अमर उजाला टीम

जिंदगी की भागदौड़ और जटिलताएं अकसर आदमी को भविष्य में ज्यादा दूर तक देखने का मौका ही नहीं देती हैं। ऐसे में खुद की जिंदगी से जुड़ी एक बेहद अहम चीज कहीं पीछे छूट जाती है, वह है बुढ़ापे में गुजर-बसर का इंतजाम करना यानी रिटायरमेंट प्लानिंग। हाल के एक सर्वे के मुताबिक हमारे देश में करीब 80 फीसदी लोग रिटायरमेंट की कोई प्लानिंग नहीं कर पाते हैं। जो लोग कुछ प्लानिंग करते भी हैं, वह अक्सर उनकी भावी जरूरतों और जीवन शैली को देखते हुए नाकाफी ठहरती है। इसलिए बहुत जरूरी है कि रिटायरमेंट की प्लानिंग करते वक्त दिमाग को पूरी तरह खुला रखा जाए और एक सुलझा हुआ रवैया अपनाते हुए ऐसी योजना तैयार की जाए कि बाद में पछताना और परेशानियों का सामना न करना पड़े। रिटायरमेंट की प्लानिंग में की जाने वाली कुछ आम गलतियों के बारे में जान-समझ कर आप इनसे बच सकते हैं।

खर्चों का सही आकलन न कर पाना

खर्चों का हिसाब-किताब रिटायरमेंट प्लानिंग का पहला कदम होता है। इसलिए यह सबसे महत्वपूर्ण भी होता है। खर्चों का अगर आपने ठीक-ठीक आकलन नहीं किया है तो बहुत संभव है कि आपका रिटायरमेंट फंड कम पड़ जाए। इसलिए अंदाजे से काम चलाने के बजाय आप अपने पिछले कुछ महीनों के मासिक खर्च का एक विवरण तैयार करें और इसके औसत के आधार पर अपने फंड की राशि तय करें, तो यह आपके लिए माकूल रहेगा।

महंगाई का ध्यान न रखना

रोजमर्रा की जिंदगी में तो लोग महंगाई की दुहाई देते नहीं थकते, पर रिटायरमेंट प्लानिंग के वक्त अकसर इसे भुला देते हैं। नतीजा यह होता है कि महंगाई के प्रभाव के चलते समय आने पर आपका फंड बौना साबित होता है। ऐसा इसलिए होता है कि बीतते हर साल के साथ रुपये का मूल्य या उसकी क्रय शक्ति कम पड़ती जाती है। मोटे तौर पर इसे इस तरह समझें कि आज जो सामान आप 10 रुपये में खरीद रहे हैं, 15-20 साल बाद उसके लिए दो गुनी से ढाई गुनी तक रकम खर्च करनी पड़ सकती है। अतः महंगाई के चलते आने वाले इस अंतर को ध्यान में रखना बहुत जरूरी है।

रिटायरमेंट फंड से पैसे निकालते रहना

रिटायरमेंट को एक दूर की चीज मानते हुए अकसर लोग अपनी तात्कालिक जरूरतों को पूरा करने के लिए अपने रिटायरमेंट फंड से पैसा निकालते रहते हैं। बेटी की शादी हो या बेटे का प्रोफेशनल कोर्स में दाखिला, पैसों के लिए नजर अकसर सबसे पहले रिटायरमेंट फंड पर ही पड़ती है। कई बार तो लोग गाड़ी खरीदने, कंस्ट्रक्शन कराने या फिर विदेश जाने तक के लिए इस फंड में सेंध लगाने से बाज नहीं आते। इसलिए रिटायरमेंट फंड को हाथ लगाने से पहले यह जरूर सोच लें कि यह पैसा उस वक्त के लिए है, जब आपकी कोई कमाई नहीं होगी और जिंदगी इसी के सहारे गुजारनी होगी।

अलग मेडिकल फंड न रखना

बीमार पड़ने पर लोग बड़े से बड़े डॉक्टर को दिखाने और अच्छा से अच्छा इलाज कराने में पैसे की कमी आड़े नहीं देते, पर रिटायरमेंट प्लानिंग करते वक्त इस बारे में नहीं सोचते हैं। इसके चलते बुढ़ापे में उन्हें बीमारियों केचलते काफी परेशानी का सामना करना पड़ता है। हालांकि सोचना यह चाहिए कि बुढ़ापे में बीमारियों और स्वास्थ्य संबंधी परेशानियों का सामना ज्यादा करना पड़ता है। इसलिए समझदारी इसी में है कि रिटायरमेंट फंड में मेडिकल खर्चों के लिए अलग से कुछ ठोस व्यवस्था करके रखी जाए।

छोटी अवधि की प्लानिंग करना

उम्र 30 साल के पार पहुंचने पर लोग जब रिटायरमेंट की प्लानिंग करते भी हैं तो उसमें भी एक कंजूसी कर जाते हैं कि रिटायरमेंट के बाद अकसर महज 10 से 15 साल की प्लानिंग करते हैं, यानी ज्यादा से ज्यादा 70 से 75 वर्ष की उम्र तक का ही इंतजाम करना पर्याप्त समझा जाता है। साफ है कि प्लानिंग के समय इस बात को भुला दिया जाता है कि मेडिकल साइंस में हुई तरक्की और जीवनशैली में आए सुधार ने लोगों की जीवन प्रत्याशा को बढ़ा दिया है। ऐसे में रिटायरमंट के बाद 25 से 30 साल की प्लानिंग करना जरूरी है।

रिटायर होने से पहले चुका दें लोन

रिटायरमेंट की प्लानिंग करते वक्त एक बहुत जरूरी बात ध्यान में यह रखनी चाहिए रिटायरमेंट से पहले-पहले अपने ज्यादा से ज्यादा कर्जे चुका दिए जाएं। ऐसा करना इसलिए जरूरी है, क्योंकि रिटायर होने के बाद आप कमा नहीं रहे होंगे। उस समय आपको जिंदगी केवल उन्हीं पैसों पर चलानी होगी, जोकि आपके रिटायरमेंट फंड के जरिये आपको मिलेंगे। इस तरह देखें तो आपका यह निवेश व बचत समय के साथ खत्म होती जाएगी। इसलिए इस फंड में से लोन की अदायगी न करनी पड़े, यही बेहतर होगा।

प्लानिंग से बुढ़ापा बनाएं शानदार

मणिकरण सिंघल
सर्टिफाइड फाइनेंशियल प्लानर
मारवल इनवेस्टमेंट्स

रिटायरमेंट के बाद जीवन आम दिनों की तरह ही चलता रहे, जरूरी खर्चों को पूरा करने के लिए मुट्ठी भरी रहे और आवश्यकता पड़ने पर परिवार के सदस्यों की सहायता के लिए आप तत्पर और तैयार रहें। यह सिर्फ सोचने से संभव नहीं है बल्कि इसके लिए आपको अपनी नौकरी या रोजगार के शुरुआती दिनों से ही तैयारी शुरू कर देनी चाहिए।

इस तैयारी को ही सामान्य शब्दों में रिटायरमेंट प्लानिंग कहते हैं। अकसर देखा गया है कि लोग रिटायरमेंट प्लानिंग को लेकर अधिक सजग नहीं रहते और इसकी अनदेखी करते हैं। भविष्य के संदर्भ में लोगों का पूरा जोर बच्चों की शिक्षा, उनकी शादी, मकान बनवाने और कुछेक शानदार छुट्टियां बिताने आदि पर ही रहता है। जबकि, रिटायरमेंट के बाद अपनी जरूरतों और खर्चों को सामान्य रूप से पूरा करने को लेकर भी पहले से ही योजना बनानी चाहिए। यह संवेदनशील और महत्वपूर्ण मुद्दा है। लोग रिटायरमेंट प्लानिंग को जरूरी तो मानते हैं लेकिन इसमें अकसर लापरवाही करते हैं।

जब भी हम रिटायरमेंट की बात करते हैं, तो हम उन दिनों के बारे में सोचते हैं जब हमें नियमित रूप से वेतन या आमदनी की प्राप्ति नहीं होगी। हमें केवल अपने स्रोतों से ही आय करनी होती है। जो व्यक्ति पूरा जीवन अपने बलबूते पर जिया हो, रिटायरमेंट के बाद वह बच्चों पर निर्भर हो जाना पसंद नहीं करेगा। अपनी मौजूदा जीवनशैली और स्वास्थ्य जरूरतों को रिटायरमेंट के बाद भी सामान्य रूप से बनाए रखने की तैयारी पहले से कर लेना ही रिटायरमेंट प्लानिंग है। इसलिए, रिटायरमेंट प्लानिंग अनिवार्य है और इसे शुरुआती दिनों में ही कर लेनी चाहिए। सीधे शब्दों में कहें तो रिटायरमेंट प्लानिंग जितनी जल्द, उतनी ही बेहतर।

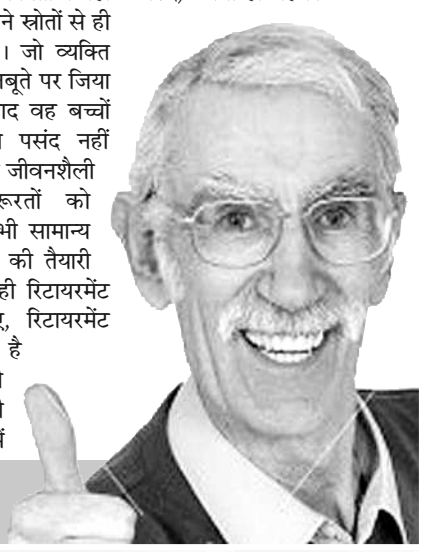

रिटायरमेंट प्लानिंग की शुरुआत जितनी जल्दी, उतनी ही रहेगी बेहतर

कैसे करें प्लानिंग

अधिकांश लोग रिटायरमेंट प्लानिंग और पेंशन प्लानिंग को लेकर भ्रम की स्थिति में रहते हैं। उनका मानना होता है कि पेंशन प्लान खरीद लेना भर ही रिटायरमेंट प्लानिंग के लिए पर्याप्त है और यही रिटायरमेंट प्लानिंग है। लेकिन लोगों का यह आकलन उचित नहीं है। पेंशन को लेकर ही केवल तैयारी कर लेना रिटायरमेंट प्लानिंग नहीं है बल्कि यह उसका एक हिस्सा भर है। रिटायरमेंट प्लानिंग में सबसे पहले आपको अपनी जरूरतों को समझ लेना चाहिए। यानी, रिटायरमेंट के बाद आप पर कौन-कौन सी और किस तरह की जिम्मेदारियां रहेंगी, जिनका आपको निर्वहन करना पड़ेगा। दूसरा, रिटायरमेंट प्लानिंग के लिए निवेश की शुरुआत करने के साथ ही जोखिम प्रबंधन को लेकर भी तैयारी कर लेनी चाहिए। जैसेकि, यदि आपने ठीक-ठीक बीमा नहीं कराया है तो आपकी पूरी की पूरी बचत एक हादसे में समाप्त हो सकती है। रिटायरमेंट प्लानिंग की शुरुआत मौजूदा खर्चों को समझकर करनी चाहिए। आपके पास इसका सीधा हिसाब होना चाहिए कि आप मासिक खर्चों मसलन राशन, फल, दूध, बेकरी आदि पर कितना खर्च करते हैं, मनोरंजन पर आपका व्यय कितना है, आपके व्यक्तिगत और सालाना छुट्टियों पर होने वाले खर्चे कितने तक चले जाते हैं। इससे आपको इसका अंदाजा हो जाएगा आपका बुनियादी, जरूरी और गैर जरूरी खर्च कितना है। रिटायरमेंट प्लानिंग में इन कुल वाजिब खर्चों पर 10 फीसदी की सामान्य बढ़ोतरी निर्धारित कर लेनी चाहिए। रिटायरमेंट की बची अवधि में महंगाई दर से हिसाब से अपने बढ़े खर्चों का आकलन कर लेना चाहिए। निवेश के शुद्ध उत्पादों जैसेकि पीपीएफ, एफडी, म्यूचुअल फंड आदि में निवेश का पोर्टफोलियो तैयार कर इसकी शुरुआत कर देनी चाहिए। इसमें बीमा कवरेज को शामिल नहीं करें बल्कि उसे अलग से पर्याप्त सम एश्योर्ड राशि के साथ खरीद लें। सामान्यत: इस तरह रिटायरमेंट प्लानिंग कर आप अपने बुढ़ापे को सुखमय बनाने की दिशा कदम बढ़ा सकते हैं।

रिटायरमेंट प्लानिंग का हिसाब-किताब

उम्र	मासिक खर्च वर्तमान	महंगाई दर औसत आकड़ा	रिटायरमेंट के समय संभावित मासिक खर्च	रिटायरमेंट फंड संभावित	मासिक निवेश अपेक्षित
30	₹35,000	7% सालाना	₹2,66,430	₹5.79 करोड़	₹25,613
40	₹35,000	7% सालाना	₹1,35,440	₹2.94 करोड़	₹38,716
50	₹35,000	7% सालाना	₹68,850	₹1.49 करोड़	₹72,738

नोट: गणना मासिक निवेश की राशि पर 10 फीसदी सालाना की दर से रिटर्न के आधार पर की गई है और रिटायरमेंट के बाद फंड को ऐसे सुरक्षित निवेश में रखा गया है, जिसमें 8 फीसदी सालाना का सुनिश्चित रिटर्न मिले। गणना संकेतक मात्र है।

पीपीएफ का नहीं जवाब

पब्लिक प्रोविडेंट फंड यानी पीपीएफ बचत, निवेश और रिटर्न का एक बेहतर स्वरूप है। यदि आप रिटायरमेंट के बाद की योजना बना रहे हैं, तो पीपीएफ अकाउंट को अपने पोर्टफोलियो में जरूर शामिल करें। कोई भी वेतनभोगी और बिजनेस करने वाला व्यक्ति अपना पीपीएफ अकाउंट खुलवा सकता है।

पीपीएफ अकाउंट की परिपक्वता अवधि 15 साल की होती है और परिपक्वता पर रिटर्न करमुक्त होता है। इसमें एक वित्तीय वर्ष में अधिकतम एक लाख रुपये का निवेश किया जा सकता है। इस निवेश पर कर में कटौती का भी लाभ मिलता है। पीपीएफ अकाउंट में हर वित्तीय वर्ष में न्यूनतम 500 रुपये का निवेश आवश्यक है। पीपीएफ खाते पर निवेशक को 8.80 फीसदी ब्याज मिल रहा है। इसे डाकघर और सार्वजनिक क्षेत्र के कुछ बैंकों में खुलवाया जा सकता है। पीपीएफ अकाउंट पर कम ब्याज पर लोन की भी सुविधा मिलती है। आप महज 2 फीसदी सालाना ब्याज पर लोन की सुविधा प्राप्त कर सकते हैं।

जरूरतें पूरा करने का बेहतर विकल्प एनपीएस

नेशनल पेंशन प्लॉन या न्यू पेंशन स्कीम यानी एनपीएस नौकरी से रिटायर होने के बाद पेंशन पाने का बहुत ही कारगर और आसान उपाय है। एनपीएस एक तरह से लंबी अवधि की बचत योजना है, जिसका उद्देश्य रिटायरमेंट के बाद लोगों की आवश्यकताओं को पूरा करने में उन्हें सक्षम बनाना है। सरकारी नौकरियों में कार्यरत लोगों को छोड़ दिया जाए तो निजी सेक्टरों में काम करने वाले संगठित या असंगठित या स्वयं का रोजगार करने वालों के लिए पेंशन के बारे में सोचना काफी मुश्किल लगता है। लेकिन सरकार की ओर से शुरू की गई न्यू पेंशन स्कीम से वह लोग भी अपने बुढ़ापे को बेहतर बना सकते हैं। केंद्र सरकार ने जनवरी 2004 में सरकारी कर्मचारियों के लिए न्यू पेंशन व्यवस्था शुरू की गई थी। तब यह केवल केंद्र और राज्य सरकारों के कर्मचारियों के लिए ही उपलब्ध थी। बाद में 1 मई 2009 से इस स्कीम की सुविधा हर भारतीय नागरिक के लिए उपलब्ध करा दी गई।

रिटायरमेंट के बाद यदि टैक्स की देनदारी बने तो यह काफी कष्टकारक और परेशान करने वाली रहती है। इसलिए, जब भी पेंशन की प्लानिंग करनी चाहिए उसमें टैक्स की बचत करने वाले विकल्पों के बारे में जरूर सोचना चाहिए। एनपीएस में निवेश टैक्स सेविंग के नजरिए से भी लाभकारी है। कुल मिलाकर देखें तो एनपीएस से दोतरफा लाभ मिलता है। पहला, बुढ़ापे में पेंशन का सहारा और दूसरा टैक्स की बचत करने में सहूलियत। हालांकि इस बात का ध्यान जरूर रखना चाहिए कि एनपीएस में रिटर्न गारंटेड नहीं होता है, बल्कि यह फंड के प्रदर्शन पर निर्भर करता है।

न्यू पेंशन स्कीम में 18 से 60 साल का कोई भी भारतीय नागरिक निवेश कर सकता है। इसमें हर माह कम से कम 500 रुपये 60 साल की उम्र तक जमा कराना होगा। जमा राशि में से 60 फीसदी भुगतान 60 साल की उम्र में मिलेगा, जबकि शेष 40 फीसदी राशि से हर माह पेंशन के रूप में मिलती है।

एनपीएस को लोकप्रिय बनाने के लिए आम बजट 2010-11 में तत्कालीन वित्तमंत्री ने 'स्वावलंबन स्कीम' की शुरुआत की। इसके तहत, वित्तीय वर्ष 2010-11 में खोले जा रहे असंगठित क्षेत्र के न्यू पेंशन स्कीम (एनपीएस) खातों में सरकार की तरफ से 3 वर्षों तक 1,000 रुपये का अंशदान भी करने का ऐलान किया गया।

जान लें टैक्स बचत के प्रावधान

आयकर अधिनियम की धारा 80 सीसीडी के तहत वेतनभोगी कर्मचारी सालाना वेतन (बेसिक एवं डीए) का अधिकतम 10 फीसदी एवं सेल्फ एम्प्लायड ग्रॉस टोटल इनकम का अधिकतम 10 फीसदी न्यू पेंशन स्कीम में निवेश कर टैक्स में छूट प्राप्त कर सकते हैं। यह ध्यान रखना आवश्यक है कि धारा 80सी, 80 सीसीसी एवं 80 सीसीडी के तहत अधिकतम छूट 1 लाख रुपये तक की ही प्राप्त की जा सकती है। इस स्कीम में ईईटी के आधार पर टैक्स लगता है, अर्थात जब पैसा निकाला जाता है तो उस पर टैक्स अदा करना होता है। लेकिन यदि आप निकाली गई रकम से किसी इंश्योरेंस कंपनी से एन्यूटी ले लेते हैं, तो आपको निकाली गई राशि पर टैक्स नहीं देना होगा।

दो तरह के होते हैं अकाउंट

एनपीएस के दो तरह के अकाउंट टीयर -1 और टीयर-2 खोले जा सकते हैं। टीयर- 1 एक तरह से आपका रिटायरमेंट सेविंग अकाउंट होता है। इसमें एक समय में न्यूनतम 500 रुपये और एक साल में न्यूनतम 6,000 रुपये का अंशदान जरूरी है। एक साल में एक अंशदान होना चाहिए। इसमें अधिकतम निवेश की कोई सीमा नहीं है। इसकी निकासी परिपक्वता पर ही कराई जा सकती है। टीयर- 2 अकाउंट का इस्तेमाल आप बचत खाते की तरह कर सकते हैं। इस अकाउंट को न्यूनतम 1,000 रुपये से खोला जा सकता है। एक समय में न्यूनतम 250 रुपये व साल के अंत में खाते का न्यूनतम बैलेंस 2,000 रुपये होना आवश्यक है। अपनी इच्छानुसार निकासी कर सकते हैं। टीयर- 2 खाता के लिए टीयर-1 खाता होना जरूरी है।

एमआईएस से होगी नियमित आय

रिटायरमेंट के बाद आपकी रोजमर्रा की जरूरतें या खर्चे रिटायर नहीं होते हैं। कहने का मतलब है कि रिटायर होने के बाद नियमित खर्चों और आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए जरूरी है कि मासिक आमदनी भी होती रहे। डाकघर की मासिक आय खाता योजना (एमआईएस) एक ऐसा विकल्प है, जिसके जरिए आप अपने रिटायरमेंट पर मिले पैसों में से कुछ एकमुश्त निवेश कर मासिक आधार पर उसका ब्याज कमा सकते हैं। रिटायर कर्मचारियों और वरिष्ठ नागरिकों के लिए एमआईएस एक बेहतर स्कीम है।

एमआईएस खाते की परिपक्वता पांच साल की होती है। हर पांच साल बाद इसे आप नए सिरे से शुरू कर सकते हैं। इसमें खाताधारक को एकमुश्त जमा पर हर माह ब्याज मिलता है। लेकिन, परिपक्वता पर किसी तरह का बोनस नहीं दिया जाता है। अभी एमआईएस पर 8.50 फीसदी ब्याज मिल रहा है। एमआईएस पर मिलने वाला ब्याज खुद ब खुद बचत खाते में जमा हो जाता है। इस बचत खाते को सिंगल या ज्वाइंट अकाउंट दोनों तरह से किसी भी डाकघर में खोला जा सकता है। सिंगल अकाउंट के लिए निवेश की न्यूनतम सीमा 1,500 रुपये और अधिकतम 4.5 लाख रुपये है। जबकि, ज्वाइंट अकाउंट में निवेश की न्यूनतम सीमा 1,500 रुपये और अधिकतम सीमा 9 लाख रुपये है।

खरीदें जमीन का एक छोटा टुकड़ा

जमीन का एक छोटा टुकड़ा लंबी अवधि में कमाल कर सकता है। युवावस्था में जब भी हाथ में पैसे हों कोशिश करें कि जमीन का एक छोटा टुकड़ा खरीद कर छोड़ दें। जमीन खरीदने में कुछ खास सावधानी की जरूरत होगी, जैसे कि जमीन वैसी खरीदें जिसमें कोई कानूनी अड़चन न हो। रिहायशी जमीन की कीमत में तेज बढ़ोतरी होती है। जमीन का टुकड़ा शहर के बीच न होकर शहर के बाहर ऐसी जगह हो जहां शहर का विकास संभावित है, तो भविष्य में वहां जमीन की कीमत बहुत ही तेज बढ़ेगी।

इक्विटी को न भूलें

अकसर जब भी रिटायरमेंट प्लानिंग की बात आती है, तो लोग ईपीएफ, पीपीएफ, एफडी और एनएससी जैसे विकल्पों को ही तरजीह देते हैं। इनमें से भी लोगों को सबसे अधिक भरोसा ईपीएफ और एफडी पर ही देखा गया है। हालांकि, बदलते परिवेश के साथ रिटायरमेंट प्लानिंग के परंपरागत तरीकों में थोड़ा बदलाव लाना चाहिए।

रिटायरमेंट प्लानिंग एक लंबी अवधि की योजना है। इस लिहाज से देखें तो लंबी अवधि के लिए इक्विटी यानी शेयरों में निवेश करना भी रिटायरमेंट प्लानिंग के मद्देनजर एक अहम कदम साबित हो सकता है। शार्ट टर्म में इक्विटी भले ही सर्वाधिक जोखिम का निवेश विकल्प नजर आता है लेकिन लंबी अवधि में अभी भी रिटर्न देने के मामले इक्विटी बाजार का प्रदर्शन बेहतर रहा है। मान लीजिए, अभी यदि आपकी उम्र 30 साल के आसपास है, तो आपकी सेवानिवृत्ति में कम से कम 28 से 30 साल का समय बाकी है। यानी, यदि इस समय आप लंबी अवधि का लक्ष्य रखकर शेयरों में निवेश करते हैं तो रिटायरमेंट के समय या बाद में यह आपको अच्छा खासा एकमुश्त रिटर्न दे सकता है।

• राशिफल

मेष नौकरी में कार्य कुशलता का लाभ,स्थान परिवर्तन संभव एवं व्यवसाय के लाभ में सुधार होगा।

वृषभ अटके कार्य की पूर्ति, अध्ययन में रुचि, आर्थिक क्षेत्र में परेशानी एवं व्यवसाय में लाभ होगा।

मिथुन लोकप्रियता में कमी,क्रोध पर नियंत्रण कार्य सिद्धि में सहायक एवं व्यवसाय में सामान्य लाभ होगा।

कर्क नौकरी में अधिकारी पक्ष से परेशानी,पारिवारिक सुख शांति में वृद्धि, व्यवसाय में धन लाभ होगा।

सिंह सरकारी क्षेत्र में सफलता,आर्थिक क्षेत्र में सुधार, धर्म में रुचि एवं व्यवसाय में प्रगति व लाभ होगा।

कन्या स्वजनों का सहयोग,नए व्यक्ति से सचेत रहना हितकर एवं व्यवसाय में लाभ मार्ग प्रशस्त रहेगा।

तुला योजनाओं की पूर्ति में विलंब, जीवन साथी के स्वास्थ्य की चिंता एवं व्यवसाय में लाभ होगा।

वृश्चिक अदालती मामलों में विजय,अर्थ प्राप्ति की खुशी, व्यवसाय में अचानक लाभ, घर में शांति रहेगी।

धनु अध्ययन में रुचि,नौकरी में श्रम की अधिकता, स्वास्थ्य नरम एवं व्यवसाय में धन लाभ होगा।

मकर संपत्ति के मामलों में परेशानी,व्यर्थ विवाद के अवसर,व्यवसाय में लाभ,परिवार में तनाव रहेगा।

कुंभ सामाजिक प्रतिष्ठा का लाभ, राजनैतिक कार्यों में व्यस्तता एवं व्यवसाय में लाभ बढ़ेगा।

मीन स्वास्थ्य में परेशानी, मित्र का सहयोग, नौकरी में स्थिति सामान्य एवं व्यवसाय में लाभ होगा।

• पंचांग / व्रत त्योहार

कल का पंचांग व्रत त्योहार: प्रदोषव्रत, क्रिसमसडे, शिशिरऋतु, सूर्यउत्तरायणे, दक्षिणगोले। राहुकाल: दिन में 03.00 से 04.30 तक। पंचांग: विक्रमी (विश्वावसु) संवत् 2069, 04 पौष मास शक 1934, पौष मास 11 प्रविष्टे, 11 सफर हिज़री 1434,मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष द्वादशी 08.02 तक उपरांत त्रयोदशी, कृतिका नक्षत्र 20.57 तक उपरांत रोहिणी नक्षत्र, साध्य योग 26.48 तक उपरांत शुभ योग,बालव करण 08.02 तक उपरांत कौलव करण,चन्द्रमा वृष राशि में दिन रात।

आज जिनका जन्मदिन है इस वर्ष प्रत्येक क्षेत्र में अनुकूल सफलता मिलेगी। आर्थिकक्षेत्र में उन्नति होगी। विरोधी परास्त होंगे। सामाजिक मान्यता में वृद्धि होगी। विदेश यात्रा के अवसर मिल सकते हैं। यात्राएं अधिक होंगी। परीक्षाओं में सफलता एवं इंजीनियरिंग,बीमा, सीए, एमबीए,वकालत,शोध कार्य आदि क्षेत्रों में करियर बनाने के अवसर मिलेंगे। व्यवसाय में धन लाभ बढ़ेगा। साझेदारी में नए व्यवसाय का प्रारंभ होगा। नौकरी में अचानक उन्नति की खुशी होगी। आरोग्य सुख बढ़ेगा।

आज के व्रत त्योहार मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष द्वादशी

सुडोकू

9								
2			7				8	
4		1	8	3				
	2		4			3		1
	7						9	
1		3			7		6	
				1	5	6		3
	6				4			7
								8

8	5	2	9	7	6	1	4	3
7	1	9	4	8	3	2	6	5
3	4	6	5	1	2	8	9	7
5	6	8	7	2	9	4	3	1
2	9	4	3	6	1	5	7	8
1	7	3	8	5	4	9	2	6
6	2	7	6	3	8	1	5	4
4	8	5	1	9	7	6	3	2
9	3	1	2	4	5	7	8	6

ऊपर

सुडोकू 81 वर्गों का ग्रिड है, जो 9 वर्गों के ब्लॉक में बंटा हुआ होता है। कुछ वर्गों के अंक लिखे हैं और खाली वर्गों में1 से लेकर 9 तक के अंक लिखने होते हैं। कोई नंबर 1 पंक्ति, कॉलम या 9 वर्ग वाले छोटे ब्लॉक में दोबारा नहीं आ सकता है।

आज की फिल्में

जी सिनेमा		स्टार गोल्ड		सेट मैक्स	
2.50	नाग देवता	3.15	चमत्कार	2.20	बैंड बाजा बारात
6.05	मैजिक रोबोट	6.35	कुली नंबर वन	5.30	ये रास्ते हैं प्यार के
9.00	लाडला	9.00	एक और एक ग्यारह	9.00	वास्तवःद रियलिटी